कांग्रेस प्रणाली_ चुनौतियाँ और पुनर्स्था

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» नेहरू के बाद राजनीतिक उत्तराधिकार की चुनौती

प्रश्न 1 (आसान). नेहरू जी का निधन किस वर्ष हुआ था?
उत्तर – 1964 में।

प्रश्न 2 (आसान). नेहरू जी के बाद भारत का अगला प्रधानमंत्री कौन बना?
उत्तर – लाल बहादुर शास्त्री।

प्रश्न 3 (मध्यम). नेहरू के बाद राजनीतिक उत्तराधिकार की चुनौती को 'लोकतंत्र के भविष्य का सवाल' क्यों कहा गया?
उत्तर – क्योंकि नए-आज़ाद हुए भारत में एक इतने बड़े नेता के जाने के बाद, यह देखना था कि क्या देश लोकतांत्रिक तरीके से नया नेतृत्व चुन पाएगा या तानाशाही आ जाएगी।

प्रश्न 4 (कठिन). नेहरू के निधन के समय भारत के सामने बाहरी देशों को क्या मुख्य संदेह था?
उत्तर – बाहरी देशों को संदेह था कि भारत जैसे नव-स्वतंत्र देश में नेहरू के बाद लोकतंत्र कायम रह पाएगा या नहीं, कहीं भारत भी दूसरे देशों की तरह राजनीतिक अस्थिरता का शिकार न हो जाए।

» शास्त्री का कार्यकाल और प्रमुख चुनौतियाँ

प्रश्न 5 (आसान). शास्त्री जी का प्रधानमंत्री के रूप में कार्यकाल किस वर्ष से किस वर्ष तक था?
उत्तर – 1964 से 1966 तक।

प्रश्न 6 (आसान). शास्त्री जी ने भारत के सैनिकों और किसानों के सम्मान में कौन सा प्रसिद्ध नारा दिया था?
उत्तर – जय जवान, जय किसान।

प्रश्न 7 (मध्यम). शास्त्री जी के कार्यकाल की किन्हीं दो प्रमुख चुनौतियों का उल्लेख कीजिए।
उत्तर – आर्थिक कठिनाइयाँ और सूखा, तथा 1965 का भारत-पाकिस्तान युद्ध।

प्रश्न 8 (कठिन). शास्त्री जी ने 'जय जवान, जय किसान' का नारा क्यों दिया था? उन चुनौतियों को समझाइए जिनके संदर्भ में यह नारा महत्वपूर्ण था।
उत्तर – यह नारा उन्होंने 1965 के युद्ध (जवान) और देश में खाद्यान्न संकट व सूखे (किसान) जैसी दोहरी चुनौतियों का सामना करने के लिए दिया था। यह देश को एक साथ दो मोर्चों पर मजबूती से खड़े होने का संदेश था।

» इंदिरा गांधी का सत्ता में आना

प्रश्न 9 (आसान). लाल बहादुर शास्त्री का निधन किस वर्ष हुआ?
उत्तर – 1966 में।

प्रश्न 10 (आसान). इंदिरा गांधी के खिलाफ प्रधानमंत्री पद के लिए कौन से नेता उम्मीदवार थे?
उत्तर – मोरारजी देसाई।

प्रश्न 11 (मध्यम). कांग्रेस पार्टी ने प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार का चुनाव किस प्रक्रिया से किया?
उत्तर – कांग्रेस सांसदों ने गुप्त मतदान (secret ballot) के ज़रिए चुनाव किया।

प्रश्न 12 (कठिन). इंदिरा गांधी के प्रधानमंत्री बनने की प्रक्रिया भारतीय लोकतंत्र की परिपक्वता को कैसे दर्शाती है?
उत्तर – यह प्रक्रिया दिखाती है कि भारत का लोकतंत्र कितना मजबूत था। नेहरू और फिर शास्त्री जी के निधन जैसी दो बड़ी चुनौतियों के बावजूद, देश ने बिना किसी अशांति के, लोकतांत्रिक तरीके से अपने नेता चुने। दो बड़े नेताओं के बीच कड़े मुकाबले के बावजूद, सांसदों ने वोटिंग करके शांतिपूर्ण ढंग से फैसला किया, जो एक परिपक्व लोकतंत्र की पहचान है।

» 1967 के चौथे आम चुनावों का संदर्भ

प्रश्न 13 (आसान). 1967 के चुनावों से पहले भारत में कितने प्रधानमंत्रियों का जल्दी-जल्दी निधन हुआ था?
उत्तर – दो प्रधानमंत्रियों – जवाहरलाल नेहरू और लाल बहादुर शास्त्री।

प्रश्न 14 (आसान). 1967 के समय भारत की कौन सी बड़ी आर्थिक समस्या थी?
उत्तर – सूखा और खाद्य संकट।

प्रश्न 15 (मध्यम). रुपये के अवमूल्यन का क्या अर्थ है और 1967 में इसका डॉलर से क्या अनुपात था?
उत्तर – रुपये के अवमूल्यन का मतलब है कि हमारी मुद्रा का मूल्य विदेशी मुद्रा की तुलना में कम हो जाना। 1967 में, 1 अमेरिकी डॉलर की कीमत ₹5 से बढ़कर ₹7 हो गई थी।

प्रश्न 16 (कठिन). 1967 की आर्थिक स्थिति ने जनता के बीच किस तरह का माहौल बनाया और सरकार की प्रतिक्रिया क्या थी?
उत्तर – आर्थिक स्थिति ने जनता के बीच व्यापक असंतोष, महंगाई, खाद्य पदार्थों की कमी और बेरोज़गारी को लेकर भारी विरोध का माहौल बनाया। लोग अक्सर 'बंद' और 'हड़ताल' करते थे। सरकार ने इसे कानून-व्यवस्था की समस्या माना, न कि लोगों की बदहाली की अभिव्यक्ति, जिससे लोगों की नाराजगी और बढ़ गई।

» गैर-कांग्रेसवाद की रणनीति

प्रश्न 17 (आसान). गैर-कांग्रेसवाद की रणनीति का मुख्य उद्देश्य क्या था?
उत्तर – कांग्रेस के अलोकतांत्रिक शासन को समाप्त करना।

प्रश्न 18 (आसान). किस नेता ने 'गैर-कांग्रेसवाद' का नारा दिया था?
उत्तर – राममनोहर लोहिया।

प्रश्न 19 (मध्यम). विपक्षी दलों ने क्यों महसूस किया कि उन्हें कांग्रेस के खिलाफ एकजुट होना चाहिए?
उत्तर – उन्होंने महसूस किया कि उनके वोट बँट जाने के कारण ही कांग्रेस सत्ता में बनी रहती है, और इंदिरा गांधी की अनुभवहीनता तथा कांग्रेस की अंदरूनी कलह उन्हें कांग्रेस को हटाने का मौका दे रही थी।

प्रश्न 20 (कठिन). 'गैर-कांग्रेसवाद' के पीछे राममनोहर लोहिया का क्या वैचारिक तर्क था? विस्तार से समझाइए।
उत्तर – लोहिया का तर्क था कि कांग्रेस का शासन अलोकतांत्रिक हो गया है और यह गरीब लोगों के हितों के खिलाफ है। उनके अनुसार, लोकतंत्र को 'वापस लाने' और गरीबों के हक में खड़ा होने के लिए सभी गैर-कांग्रेसी दलों का एक साथ आना बहुत ज़रूरी था, भले ही उनकी अपनी विचारधाराएँ अलग-अलग हों।

» 1967 के चुनावों के परिणाम

प्रश्न 21 (आसान). 1967 के चुनाव परिणामों को 'राजनीतिक भूकंप' क्यों कहा गया?
उत्तर – क्योंकि कांग्रेस को राष्ट्रीय और प्रांतीय स्तर पर भारी नुकसान हुआ था।

प्रश्न 22 (आसान). क्या 1967 के चुनाव में कांग्रेस लोकसभा में बहुमत हासिल कर पाई थी?
उत्तर – हाँ, कांग्रेस को लोकसभा में बहुमत तो मिल गया था, लेकिन उसकी सीटें और वोट प्रतिशत बहुत कम हो गए थे।

प्रश्न 23 (मध्यम). 1967 के बाद कितने राज्यों में कांग्रेस सत्ता से बाहर हो गई थी?
उत्तर – कुल 9 राज्यों में कांग्रेस सत्ता से बाहर हो गई थी।

प्रश्न 24 (कठिन). उन 9 राज्यों में से किन्हीं तीन के नाम बताइए जहाँ कांग्रेस 1967 में सरकार नहीं बना पाई थी।
उत्तर – पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, बिहार, पश्चिम बंगाल, उड़ीसा, मद्रास (तमिलनाडु), केरल, मध्य प्रदेश (कोई भी तीन)।

» गठबंधन और दल-बदल की राजनीति

प्रश्न 25 (आसान). 1967 के चुनावों के बाद किस राजनीतिक प्रवृत्ति का उदय हुआ?
उत्तर – गठबंधन सरकारों का उदय हुआ।

प्रश्न 26 (आसान). दल-बदल का क्या अर्थ है?
उत्तर – जब एक चुना हुआ जनप्रतिनिधि अपनी पार्टी छोड़कर दूसरी पार्टी में शामिल हो जाता है।

प्रश्न 27 (मध्यम). हरियाणा के किस विधायक के दल-बदल से 'आया राम-गया राम' मुहावरा प्रसिद्ध हुआ?
उत्तर – गया लाल नामक विधायक के कारण।

प्रश्न 28 (कठिन). गठबंधन और दल-बदल ने 1967 के बाद भारतीय राजनीति को कैसे प्रभावित किया?
उत्तर – गठबंधन ने गैर-कांग्रेसी सरकारों को सत्ता में आने का मौका दिया, जिससे कांग्रेस के प्रभुत्व को चुनौती मिली। दल-बदल ने राज्यों में सरकारों को अस्थिर किया, जिससे बार-बार सरकारें गिरती-बनती रहीं और राजनीतिक निष्ठा पर सवाल उठे।

» कांग्रेस में आंतरिक विभाजन: इंदिरा बनाम सिंडिकेट

प्रश्न 29 (आसान). सिंडिकेट का मुख्य काम क्या था?
उत्तर – कांग्रेस के अंदर महत्वपूर्ण फैसले लेना और नए नेताओं को मार्गदर्शन देना।

प्रश्न 30 (आसान). किस साल कांग्रेस का विभाजन हुआ?
उत्तर – 1969 में।

प्रश्न 31 (मध्यम). इंदिरा गांधी की कौन-सी नीतियों ने सिंडिकेट को परेशान किया?
उत्तर – बैंकों का राष्ट्रीयकरण (nationalisation) और राजा-महाराजाओं के प्रिवी पर्स (Privy Purses) को खत्म करना।

प्रश्न 32 (कठिन). कांग्रेस विभाजन के पीछे केवल सत्ता संघर्ष था या वैचारिक मतभेद भी?
उत्तर – दोनों। सत्ता संघर्ष तो था ही, लेकिन इसके पीछे इंदिरा गांधी की समाजवादी नीतियां और सिंडिकेट के अधिक रूढ़िवादी विचार भी एक बड़ा कारण थे, जो पार्टी की दिशा को लेकर गहरे मतभेद दर्शाते थे।

» राष्ट्रपति पद का चुनाव, 1969 और बैंक राष्ट्रीयकरण

प्रश्न 33 (आसान). 1969 के राष्ट्रपति चुनाव में सिंडिकेट का उम्मीदवार कौन था?
उत्तर – एन. संजीव रेड्डी

प्रश्न 34 (आसान). इंदिरा गांधी ने किस उम्मीदवार का समर्थन किया था?
उत्तर – वी.वी. गिरि

प्रश्न 35 (मध्यम). 1969 के राष्ट्रपति चुनाव के बाद कांग्रेस में क्या बड़ा बदलाव आया?
उत्तर – कांग्रेस दो हिस्सों में विभाजित हो गई: कांग्रेस (ओ) - सिंडिकेट की और कांग्रेस (आर) - इंदिरा गांधी की।

प्रश्न 36 (कठिन). बैंकों के राष्ट्रीयकरण और प्रिवी पर्स के उन्मूलन जैसे कदम इंदिरा गांधी ने क्यों उठाए?
उत्तर – ये कदम इंदिरा गांधी ने अपनी 'गरीबी हटाओ' और समाजवादी छवि को मजबूत करने के लिए उठाए, जिससे वे सिंडिकेट को वैचारिक रूप से कमजोर कर सकें और जनता में अपनी लोकप्रियता बढ़ा सकें।

» प्रिवी पर्स की समाप्ति

प्रश्न 37 (आसान). 'प्रिवी पर्स' क्या था?
उत्तर – देसी रियासतों के शासकों को भारत में विलय के बदले दिया गया विशेष भत्ता और निजी संपत्ति का अधिकार।

प्रश्न 38 (आसान). किस नेता ने 'प्रिवी पर्स' को खत्म करने का विरोध किया था?
उत्तर – मोरारजी देसाई।

प्रश्न 39 (मध्यम). इंदिरा गांधी ने 'प्रिवी पर्स' को खत्म करने के लिए क्या तर्क दिया?
उत्तर – उन्होंने इसे भारतीय संविधान में वर्णित समानता और सामाजिक-आर्थिक न्याय के सिद्धांतों के खिलाफ माना और इसे वंशानुगत विशेषाधिकार बताया।

प्रश्न 40 (कठिन). प्रिवी पर्स की समाप्ति को मोरारजी देसाई ने 'विश्वासघात' क्यों कहा था?
उत्तर – मोरारजी देसाई का मानना था कि भारत सरकार ने देसी रियासतों के शासकों से विलय के समय यह वादा किया था। इस वादे को तोड़ना नैतिक रूप से गलत और विश्वासघात होगा।

» 1971 का चुनाव: 'गरीबी हटाओ' और कांग्रेस का पुनरुत्थान

प्रश्न 41 (आसान). 1971 के लोकसभा चुनाव में कांग्रेस ने कौन सा प्रसिद्ध नारा दिया था?
उत्तर – 'गरीबी हटाओ'

प्रश्न 42 (आसान). 1971 के चुनाव में इंदिरा गांधी की कांग्रेस का नाम क्या था?
उत्तर – कांग्रेस (R)

प्रश्न 43 (मध्यम). 1971 के चुनावों में विपक्षी दलों ने मिलकर कौन सा गठबंधन बनाया था और उसका नारा क्या था?
उत्तर – उन्होंने 'ग्रैंड अलायंस' बनाया था और उनका नारा 'इंदिरा हटाओ' था।

प्रश्न 44 (कठिन). 1971 के चुनाव परिणामों ने भारतीय राजनीति में कांग्रेस की स्थिति को कैसे प्रभावित किया?
उत्तर – इन चुनावों ने कांग्रेस (R) को भारी जीत दिलाई (352 सीटें) और कांग्रेस को भारतीय राजनीति में एक बार फिर से प्रभुत्व के स्थान पर स्थापित कर दिया, यह साबित करते हुए कि वही 'असली कांग्रेस' है।

» कांग्रेस प्रणाली की बदलती प्रकृति

प्रश्न 45 (आसान). इंदिरा गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस किस पर अधिक निर्भर हो गई थी?
उत्तर – अपने सर्वोच्च नेता (इंदिरा गांधी) की लोकप्रियता पर।

प्रश्न 46 (आसान). क्या 1971 के बाद कांग्रेस में आंतरिक गुटों की भूमिका बढ़ गई थी?
उत्तर – नहीं, आंतरिक गुट कमज़ोर हो गए थे।

प्रश्न 47 (मध्यम). पुरानी कांग्रेस और नई कांग्रेस में प्रमुख अंतर क्या था?
उत्तर – पुरानी कांग्रेस में विभिन्न गुटों को समायोजित करने की क्षमता थी, जबकि नई कांग्रेस अधिक केंद्रीकृत और नेता-केंद्रित थी।

प्रश्न 48 (कठिन). आप कैसे कहेंगे कि इंदिरा गांधी ने 'कांग्रेस प्रणाली' को पुनर्स्थापित ज़रूर किया, लेकिन उसकी प्रकृति को बदलकर?
उत्तर – इंदिरा गांधी ने कांग्रेस को चुनावी जीत दिलाई और उसे फिर से सत्ता में लाया, जो 'पूनर्स्थापना' का एक पहलू था। हालांकि, इस प्रक्रिया में उन्होंने पार्टी को अपने व्यक्तिगत करिश्मे और केंद्रीकृत नियंत्रण पर अत्यधिक निर्भर बना दिया। पुरानी कांग्रेस में विभिन्न विचारधाराओं और गुटों के लिए जगह थी, लेकिन नई कांग्रेस में यह समावेशिता कम हो गई, जिससे उसकी 'प्रकृति' बदल गई। यह केवल पुरानी कांग्रेस का पुनरुत्थान नहीं था, बल्कि एक नए और अलग स्वरूप में उसका उदय था।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. नेहरू जी के निधन के बाद भारत के सामने सबसे बड़ी चुनौती क्या थी और इसे कैसे हल किया गया?

› 1964 में नेहरू जी के निधन के बाद भारत के सामने 'राजनीतिक उत्तराधिकार' की चुनौती थी।

› यह सिर्फ नेता बदलने का नहीं, बल्कि भारतीय लोकतंत्र के भविष्य को बनाए रखने का सवाल था।

› अन्य देशों को आशंका थी कि भारत में लोकतंत्र कायम नहीं रह पाएगा।

› इस चुनौती को शांतिपूर्ण ढंग से हल किया गया जब लाल बहादुर शास्त्री को अगला प्रधानमंत्री चुना गया।

उत्तर – नेहरू जी के निधन के बाद भारत के सामने राजनीतिक उत्तराधिकार की चुनौती थी, जिसे शांतिपूर्ण और लोकतांत्रिक तरीके से लाल बहादुर शास्त्री को प्रधानमंत्री चुनकर हल किया गया।

उदाहरण 2. लाल बहादुर शास्त्री के प्रधानमंत्री रहते हुए भारत को 1965 में किस देश के साथ युद्ध लड़ना पड़ा?

› शास्त्री जी का कार्यकाल 1964 से 1966 तक था।

› इस दौरान भारत ने दो बड़ी चुनौतियों का सामना किया: आर्थिक कठिनाइयां और सूखा, और 1965 का युद्ध।

› 1965 का युद्ध पाकिस्तान के साथ हुआ था।

उत्तर – पाकिस्तान

उदाहरण 3. लाल बहादुर शास्त्री के निधन के बाद प्रधानमंत्री पद के लिए किन दो प्रमुख नेताओं के बीच मुकाबला था और परिणाम क्या रहा?

› लाल बहादुर शास्त्री का निधन 1966 में हुआ, जिससे प्रधानमंत्री पद फिर से खाली हो गया।

› प्रधानमंत्री पद के लिए दो प्रमुख दावेदार थे: मोरारजी देसाई और इंदिरा गांधी।

› मोरारजी देसाई एक अनुभवी नेता थे जो बंबई प्रांत के मुख्यमंत्री और केंद्रीय मंत्री रह चुके थे।

› इंदिरा गांधी जवाहरलाल नेहरू की बेटी थीं, जो पहले कांग्रेस अध्यक्ष और शास्त्री मंत्रिमंडल में मंत्री रह चुकी थीं।

› कांग्रेस पार्टी के भीतर सर्वसम्मति नहीं बन पाई, इसलिए कांग्रेस सांसदों ने गुप्त मतदान (secret ballot) के ज़रिए फैसला किया।

› इंदिरा गांधी ने मोरारजी देसाई को भारी बहुमत से हराया, उन्हें दो-तिहाई से ज़्यादा सांसदों का समर्थन मिला।

उत्तर – लाल बहादुर शास्त्री के निधन के बाद प्रधानमंत्री पद के लिए मोरारजी देसाई और इंदिरा गांधी के बीच मुकाबला था। इंदिरा गांधी ने मोरारजी देसाई को गुप्त मतदान में हराकर प्रधानमंत्री का पद संभाला।

उदाहरण 4. 1967 के चुनावों के समय भारत की आर्थिक स्थिति किन प्रमुख समस्याओं से जूझ रही थी?

› पहला: दो प्रधानमंत्रियों (नेहरू, शास्त्री) का निधन हुआ, जिससे राजनीतिक अस्थिरता का माहौल था।

› दूसरा: देश में लगातार सूखा पड़ा, जिससे कृषि उत्पादन बहुत गिर गया और खाद्य संकट पैदा हो गया।

› तीसरा: विदेशी मुद्रा भंडार कम हो गया और औद्योगिक उत्पादन में भी गिरावट आई।

› चौथा: सरकार ने रुपये का अवमूल्यन किया (डॉलर ₹5 से ₹7 हो गया), जिससे आयात महंगा हो गया और महंगाई बहुत बढ़ गई।

› पांचवां: आवश्यक वस्तुओं की कीमतों में तेज़ी से बढ़ोतरी हुई, जिससे आम लोगों में बेरोज़गारी और असंतोष बढ़ा।

उत्तर – 1967 के चुनावों के समय भारत गंभीर सूखे, खाद्य संकट, रुपये के अवमूल्यन, बढ़ती कीमतों और व्यापक बेरोज़गारी जैसी आर्थिक समस्याओं से जूझ रहा था, जिसने जनता में भारी असंतोष पैदा कर दिया था।

उदाहरण 5. राममनोहर लोहिया ने 'गैर-कांग्रेसवाद' की रणनीति क्यों प्रतिपादित की?

› पहला, उन्होंने देखा कि कांग्रेस लगातार सत्ता में रहकर अलोकतांत्रिक होती जा रही है।

› दूसरा, कांग्रेस की नीतियाँ गरीब और आम जनता के हितों के खिलाफ जा रही थीं।

› तीसरा, उन्होंने महसूस किया कि विपक्षी दल अलग-अलग लड़ने से कांग्रेस को नहीं हरा पा रहे थे, उनके वोट बँट जाते थे।

› चौथा, उनका मानना था कि लोकतंत्र को बचाना है तो कांग्रेस के एकाधिकार को तोड़ना ज़रूरी है।

› इसलिए, उन्होंने सभी गैर-कांग्रेसी दलों को एक साथ आने का आह्वान किया ताकि कांग्रेस को सत्ता से हटाया जा सके।

उत्तर – राममनोहर लोहिया ने 'गैर-कांग्रेसवाद' की रणनीति इसलिए प्रतिपादित की क्योंकि उनका मानना था कि कांग्रेस का शासन अलोकतांत्रिक और गरीब-विरोधी हो गया है, और लोकतंत्र को बचाने के लिए सभी गैर-कांग्रेसी दलों का एकजुट होना आवश्यक था।

उदाहरण 6. 1967 के चुनावों में कांग्रेस को कितने राज्यों में बहुमत नहीं मिला और किन राज्यों में गैर-कांग्रेसी सरकारें बनीं?

› पहला कदम: हमें याद करना होगा कि 1967 के चुनावों के परिणामों में कांग्रेस की क्या स्थिति थी, खासकर राज्यों में।

› दूसरा कदम: हमें यह पता चलता है कि कांग्रेस को सात राज्यों में स्पष्ट बहुमत नहीं मिल पाया था।

› तीसरा कदम: दो और राज्यों में दलबदल के कारण कांग्रेस सरकार नहीं बना सकी, जिससे कुल 9 राज्य हो गए जहाँ कांग्रेस सत्ता से बाहर थी।

› चौथा कदम: इन 9 राज्यों में पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार, पश्चिम बंगाल, उड़ीसा, मद्रास (तमिलनाडु) और केरल शामिल थे। इनमें से कई में गैर-कांग्रेसी गठबंधन सरकारें बनीं, और मद्रास में तो DMK को पूर्ण बहुमत मिला।

उत्तर – 1967 के चुनावों में कांग्रेस को 7 राज्यों में बहुमत नहीं मिला, और कुल 9 राज्यों में वह सत्ता से बाहर हो गई थी। गैर-कांग्रेसी सरकारें पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार, पश्चिम बंगाल, उड़ीसा, मद्रास (तमिलनाडु) और केरल में बनीं।

उदाहरण 7. मान लीजिए एक राज्य में विधानसभा चुनाव हुए। पार्टी 'क' को 40 सीटें मिलीं, पार्टी 'ख' को 30 सीटें और पार्टी 'ग' को 15 सीटें। कुल 100 सीटें हैं, और बहुमत के लिए 51 सीटें चाहिए। बताइए, यहाँ कौन-सा राजनीतिक घटनाक्रम होगा?

› यहाँ किसी एक पार्टी को बहुमत (51 सीटें) नहीं मिला है।

› अब, सरकार बनाने के लिए पार्टियाँ मिलकर गठबंधन बना सकती हैं।

› जैसे, पार्टी 'क' (40) और पार्टी 'ख' (30) मिलकर 70 सीटें बना सकती हैं, जो बहुमत से ज़्यादा हैं।

› या फिर, मान लो पार्टी 'क' और 'ख' मिलकर सरकार बनाती हैं, लेकिन बाद में पार्टी 'क' का एक विधायक किसी वजह से पार्टी 'ग' में चला जाता है।

› तो इस विधायक के पार्टी बदलने को 'दल-बदल' कहा जाएगा।

उत्तर – इस स्थिति में गठबंधन सरकार बनेगी, और अगर कोई विधायक अपनी पार्टी बदलता है तो उसे दल-बदल कहेंगे।

उदाहरण 8. सिंडिकेट कौन था और इंदिरा गांधी से उनका टकराव क्यों हुआ?

› पहला कदम: सिंडिकेट को समझना। ये कांग्रेस के अंदर के बहुत ही अनुभवी और ताकतवर नेता थे, जैसे एस. निजलिंगप्पा, के. कामराज, एस. के. पाटिल, अतुल्य घोष। इन्होंने ही इंदिरा गांधी को प्रधानमंत्री बनने में मदद की थी, यह सोचकर कि वह कम अनुभवी हैं और उनकी बात मानेंगी।

› दूसरा कदम: टकराव का कारण। इंदिरा गांधी सिर्फ नाम की प्रधानमंत्री नहीं बनना चाहती थीं। वह अपने हिसाब से नीतियां बनाना चाहती थीं, जैसे बैंकों का राष्ट्रीयकरण (nationalisation), राजाओं के प्रिवी पर्स खत्म करना। सिंडिकेट को लगा कि इंदिरा उनके नियंत्रण से बाहर जा रही हैं, और उनके फैसलों से पार्टी को नुकसान होगा।

› तीसरा कदम: शक्ति और विचारधारा की लड़ाई। सिंडिकेट पुरानी परंपराओं और धीमी गति से बदलाव के पक्ष में था, जबकि इंदिरा गांधी समाजवाद की तरफ झुकाव रखती थीं और तेज़ी से बड़े बदलाव चाहती थीं। यह सिर्फ कुर्सी की लड़ाई नहीं थी, बल्कि पार्टी किस दिशा में जाए, इस बात को लेकर भी गहरे मतभेद थे।

› चौथा कदम: पार्टी का विभाजन। 1969 में राष्ट्रपति चुनाव को लेकर यह लड़ाई चरम पर पहुंच गई। सिंडिकेट ने अपने उम्मीदवार नीलम संजीव रेड्डी को खड़ा किया, लेकिन इंदिरा गांधी ने वी.वी. गिरि का समर्थन किया और वह जीत गए। इसके बाद सिंडिकेट ने इंदिरा गांधी को पार्टी से निकाल दिया, और कांग्रेस दो टुकड़ों में बंट गई - कांग्रेस (ओ) यानी 'ऑर्गनाइजेशन' (सिंडिकेट) और कांग्रेस (आर) यानी 'रिक्वीजिशनिस्ट' या 'रूलिंग' (इंदिरा गांधी)।

उत्तर – सिंडिकेट कांग्रेस के पुराने, प्रभावशाली नेताओं का समूह था जिन्होंने इंदिरा गांधी को प्रधानमंत्री बनवाया था। टकराव इसलिए हुआ क्योंकि इंदिरा गांधी अपनी नीतियां लागू करना चाहती थीं और सिंडिकेट का नियंत्रण नहीं मानती थीं, जिससे सत्ता और विचारधारा दोनों स्तरों पर गंभीर मतभेद पैदा हुए, और अंततः पार्टी 1969 में विभाजित हो गई।

उदाहरण 9. 1969 के राष्ट्रपति चुनाव में कांग्रेस का विभाजन कैसे हुआ और इसके मुख्य कारण क्या थे?

› 1969 में राष्ट्रपति डॉ. जाकिर हुसैन के निधन के बाद नए राष्ट्रपति चुनाव की जरूरत पड़ी।

› सिंडिकेट ने लोकसभा अध्यक्ष एन. संजीव रेड्डी को कांग्रेस का आधिकारिक उम्मीदवार घोषित किया।

› इंदिरा गांधी ने इसे अपनी ताकत को चुनौती के रूप में देखा और उन्होंने उप-राष्ट्रपति वी.वी. गिरि को एक निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में समर्थन दिया।

› उन्होंने 'अंतरात्मा की आवाज' पर वोट डालने की अपील की, जिससे कांग्रेस के सांसद और विधायक गिरि को वोट दे सकें, भले ही वे पार्टी के उम्मीदवार न हों।

› वी.वी. गिरि चुनाव जीत गए, जिससे सिंडिकेट को बड़ा झटका लगा और कांग्रेस में आधिकारिक रूप से विभाजन हो गया।

उत्तर – 1969 के राष्ट्रपति चुनाव में सिंडिकेट और इंदिरा गांधी के बीच उम्मीदवार को लेकर हुई सीधी टक्कर के कारण कांग्रेस का विभाजन हुआ, जहाँ इंदिरा गांधी के समर्थित निर्दलीय उम्मीदवार वी.वी. गिरि की जीत ने सिंडिकेट की ताकत को कमजोर कर दिया।

उदाहरण 10. इंदिरा गांधी ने 'प्रिवी पर्स' की समाप्ति को 1971 के चुनाव में एक बड़ा मुद्दा क्यों बनाया? स्पष्ट कीजिए।

› पहला कदम: हमें समझना होगा कि 'प्रिवी पर्स' क्या था - यह देसी रियासतों के शासकों को भारत में विलय के बदले दिया गया एक विशेष भत्ता और निजी संपत्ति का अधिकार था।

› दूसरा कदम: अब सोचो, इंदिरा गांधी क्यों इसे खत्म करना चाहती थीं? उन्होंने इसे भारतीय संविधान के 'समानता' और 'सामाजिक-आर्थिक न्याय' के सिद्धांतों के खिलाफ माना। वह मानती थीं कि यह वंशानुगत विशेषाधिकार गलत है, खासकर ऐसे देश में जहाँ गरीबी बहुत ज़्यादा है।

› तीसरा कदम: 1969 में कांग्रेस के विभाजन के बाद, इंदिरा गांधी को अपनी छवि एक 'गरीबों के हितैषी' और 'समाजवादी' नेता के रूप में बनानी थी। 'प्रिवी पर्स' की समाप्ति इस छवि को मज़बूत करने का एक बेहतरीन मौका था।

› चौथा कदम: उन्होंने इसे 1971 के चुनाव में 'समाजवादी' और 'पुरातनपंथी' (यानी पुराने विचारों वाले, विशेषाधिकारों का समर्थन करने वाले) ताकतों के बीच की लड़ाई के रूप में पेश किया। उन्होंने इसे गरीबों के हिमायती और अमीरों के तरफ़दार के बीच का संघर्ष बताया।

› पांचवां कदम: इस मुद्दे पर उन्हें जनता का भारी समर्थन मिला, क्योंकि ज़्यादातर लोग विशेष अधिकारों के खिलाफ थे। इससे उन्हें एक निर्णायक जीत मिली और उन्होंने कानूनी अड़चनों को दूर कर दिया।

उत्तर – इंदिरा गांधी ने 'प्रिवी पर्स' की समाप्ति को 1971 के चुनाव में एक बड़ा मुद्दा इसलिए बनाया क्योंकि यह उनके 'गरीबों के हितैषी' और 'समाजवादी' एजेंडे के अनुरूप था। उन्होंने इसे संविधान में निहित समानता के सिद्धांतों के खिलाफ बताया और जनता के सामने इसे 'समाजवादी बनाम पुरातनपंथी' और 'गरीबों के हिमायती बनाम अमीरों के तरफ़दार' की लड़ाई के रूप में पेश किया, जिससे उन्हें व्यापक जनसमर्थन मिला और कांग्रेस को भारी बहुमत से जीत मिली।

उदाहरण 11. 1971 के लोकसभा चुनावों में, इंदिरा गांधी की कांग्रेस (R) ने किस मुख्य नारे के साथ चुनाव लड़ा और इस चुनाव के परिणाम क्या रहे?

› पहला चरण: इंदिरा गांधी की कांग्रेस (R) ने मुख्य रूप से 'गरीबी हटाओ' के नारे का इस्तेमाल किया।

› दूसरा चरण: इस नारे के जवाब में विपक्षी दलों के 'ग्रैंड अलायंस' ने 'इंदिरा हटाओ' का नारा दिया।

› तीसरा चरण: चुनाव के नतीजे बहुत चौंकाने वाले थे। कांग्रेस (R) और CPI के गठबंधन को कुल 375 सीटें मिलीं, जिसमें से अकेली कांग्रेस (R) को 352 सीटें मिलीं।

› चौथा चरण: यह पिछले चार आम चुनावों में कांग्रेस को मिली सबसे बड़ी जीत थी, जिससे भारतीय राजनीति में कांग्रेस का प्रभुत्व फिर से स्थापित हो गया।

उत्तर – 1971 के चुनावों में इंदिरा गांधी ने 'गरीबी हटाओ' के नारे के साथ चुनाव लड़ा। इस चुनाव में कांग्रेस (R) और CPI गठबंधन ने कुल 375 सीटें जीतकर भारी बहुमत हासिल किया, जिससे भारतीय राजनीति में कांग्रेस का प्रभुत्व दोबारा स्थापित हो गया।

उदाहरण 12. 1971 के बाद कांग्रेस की 'बदलती प्रकृति' को संक्षेप में स्पष्ट कीजिए।

› पहला कदम यह पहचानना है कि 'पुनर्स्थापना' का मतलब 'हुबहू वापसी' नहीं था, बल्कि 'नए स्वरूप में वापसी' था।

› दूसरा, इसकी एक मुख्य विशेषता थी 'नेता-केंद्रित' पार्टी बनना। इंदिरा गांधी की व्यक्तिगत लोकप्रियता ही पार्टी की ताकत बन गई थी।

› तीसरा, पार्टी का संगठन पहले की तरह मज़बूत और आंतरिक गुटों को समायोजित करने वाला नहीं रहा। पार्टी के अंदरूनी गुट कमज़ोर हो गए और केंद्रीय नेतृत्व, यानी इंदिरा गांधी का नियंत्रण बढ़ गया।

› चौथा, पार्टी ने समाज के कुछ विशेष वर्गों (गरीब, महिला, दलित, अल्पसंख्यक) पर अधिक ध्यान केंद्रित किया, जिससे उसकी पुरानी व्यापक सामाजिक आधार वाली छवि बदल गई।

उत्तर – 1971 के बाद कांग्रेस की प्रकृति में बदलाव आया। यह अब एक अत्यधिक केंद्रीकृत और नेता-केंद्रित पार्टी बन गई थी, जहाँ इंदिरा गांधी की लोकप्रियता सर्वोपरि थी। पार्टी की आंतरिक विविधता और विभिन्न गुटों को समायोजित करने की क्षमता कम हो गई थी, जिससे यह पहले की 'समावेशी' कांग्रेस प्रणाली से भिन्न थी।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• यह प्रश्न बोर्ड परीक्षा में अक्सर 2 या 4 अंकों में पूछा जाता है कि नेहरू के बाद राजनीतिक उत्तराधिकार की चुनौती क्या थी और इसे कैसे हल किया गया। ध्यान रखना कि इसमें सिर्फ नाम नहीं, बल्कि 'लोकतंत्र के भविष्य' और 'शांतिपूर्ण संक्रमण' जैसे बिंदुओं पर जोर देना है।

• यह भाग बोर्ड परीक्षाओं के लिए बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह 1967 के चुनावी परिणामों की पृष्ठभूमि समझाता है। आर्थिक संकट के कारणों और प्रभावों पर अक्सर प्रश्न पूछे जाते हैं।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अक्सर पूछा जाता है कि 1967 के चुनावों के परिणाम कांग्रेस प्रणाली के लिए क्या मायने रखते थे, या किन राज्यों में कांग्रेस सत्ता से बाहर हुई थी।

• यह टॉपिक बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। 'सिंडिकेट' कौन था, इंदिरा गांधी की नीतियां क्या थीं, और विभाजन के क्या कारण व परिणाम थे – इन बिंदुओं को अच्छे से याद करना।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है! 1969 के राष्ट्रपति चुनाव और बैंकों के राष्ट्रीयकरण पर सीधा प्रश्न अक्सर पूछा जाता है। इसे 'इंदिरा बनाम सिंडिकेट' की लड़ाई के संदर्भ में याद रखना, आपको अच्छे अंक दिलाएगा।

• यह अवधारणा बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अक्सर पूछा जाता है कि 'प्रिवी पर्स' क्या था और इसकी समाप्ति पर इंदिरा गांधी और मोरारजी देसाई के क्या विचार थे। ध्यान से तैयारी करना।

एक नज़र में रिवीज़न

› नेहरू निधन (1964) उत्तराधिकार चुनौती शास्त्री का चुनाव लोकतंत्र की जीत।

› 1967 चुनाव: गंभीर आर्थिक संकट, सूखा, महंगाई, अवमूल्यन, जनविरोध पृष्ठभूमि।

› 1967 चुनाव: कांग्रेस को भारी नुकसान, 9 राज्यों में गैर-कांग्रेसी सरकारें।

› सिंडिकेट बनाम इंदिरा गांधी: सत्ता व वैचारिक संघर्ष, 1969 कांग्रेस विभाजन।

› 1969 राष्ट्रपति चुनाव ने कांग्रेस को विभाजित किया; इंदिरा गांधी ने बैंक राष्ट्रीयकरण कर लोकप्रियता बढ़ाई।

› 'प्रिवी पर्स': राजाओं को भत्ता, इंदिरा ने समानता हेतु समाप्त किया, 1971 चुनाव मुद्दा।